International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 08-06-2023, Accepted: 24-06-2023, Published: 10-07-2023
Volume 9, Issue 4, 2023, Page No. 5-6

21वीं सदी का दूसरा दशक और हिन्दी उपन्यास

कुमारी आरती[1], डॉ. ममता गोयल[2]
[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, ग्वालियर (मध्यप्रदेश), भारत
[2] प्राध्यापक, हिन्दी विभाग महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, ग्वालियर (मध्यप्रदेश), भारत

सारांश
21वीं शती का परिवेश वस्तुतः दुर्धर्ष है। इस शती में वैश्वीकरण की आँधी जितने उग्र और प्रबल रूप में आई है कि उसको वश में करना कठिन क्या प्रायः असम्भव है। वस्तुतः यह अमेरिकीकरण की आँधी है, उस महाशक्ति की आँधी है जिसने पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति को अपना वशवर्ती बना लिया है। ऐसी स्थिति में हिन्दी के लेखकों का ध्यान भी इन समस्याओं की ओर गया और उन्होंने हर समस्या पर अपनी कलम चलाई। लेखकों ने चाहे वह किसान समस्या हो, व्यक्ति का अकेलापन, स्त्री समस्या इत्यादि विषयों पर उपन्यास लिखे।

मूल शब्दः दुर्धर्ष, वेश्वीकरण, संरचना

'फाँस' 2015 में प्रकाशित संजीव का उपन्यास किसानों की आत्महत्या पर लिखा पहला उपन्यास है, जो इस भयावह स्थिति की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करता है। विदर्भ जहाँ सबसे अधिक किसान आत्महत्या कर रहे थे, वहाँ समस्या विकराल थी। कहने को तो यहाँ सफेद सोना कही जाने वाली फ़सल कपास का सर्वाधिक उत्पादन हो रहा था पर उसका लागत मूल्य न मिलने के कारण किसानों पर सहकारी बैंकों से अधिक स्थानीय महाजनों का कर्ज़ बढ़ता जा रहा था।

'अकबर' 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' 2016 इन दोनो उपन्यास की कथा–भूमि एक दूसरे से मिलती है। एक इतिहास के उस कालखण्ड को गहराई से उकेरता है, जिसमें एक अपराजेय बादशाह तमाम सफलताओं के बावजूद दीन को नया रूप देने के लिए बेचैन है।

शाजी जमाँ ने 'अकबर' पर उपन्यास लिखने के लिए सभी ज्ञात–अज्ञात सामग्री का उपयोग किया है और मुगल–कालीन इतिहास के विद्वानों का सहारा लेकर अकबर का जो चरित्र रचा, वह समूचे रूप में इतिहास में नहीं है। चित्रा मुग्दल का इसी वर्ष प्रकाशित उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' तृतीय लिंगी समाज के प्रति हमारे अपने समाज की घृणा और उपेक्षा को माँ और बेटे का परस्पर संवाद है पर सामाजिक और पारिवारिक संरचना में दोनों ही न तो एक–दूसरे की सहायता करने की स्थिति में है और न समाज उन्हे इस प्रकार अवसर प्रदान करता है।

चित्रा मुग्दल ने माँ–बेटे के आत्मीय पात्रों के माध्यम से उन भावनाओं को उभारा है, जो माँ की ममता और पुत्र की उपेक्षित पीड़ा को साकार करने में सम्भव हुए हैं। लेखिका ने उपन्यास में यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि जब दिव्यांग व्यक्तियों का पालन–पोषण आसानी से उसी घर में हो सकता है तो केवल जननेन्द्रिय की कमी के कारण परिवार वाले उन्हे उपेक्षित समझे जाने वाले समाज को क्यों सौंप देते हैं।

2017 में प्रकाशित उपन्यासों में सौ साल पहले, कल्चर वल्चर, सहेला रे है। 'सो साल पहले' उपन्यास 1917 के चम्पारण आन्दोलन पर है, जिसका शताब्दी समारोह 2017 में व्यापक स्तर पर आयोजित किया गया। उपन्यास में सुजाता ने दिखाया गया है कि जब से विश्वविद्यालयों में गाँधी अध्ययन विभाग खुले हैं तब से गाँधी के अध्येताओं की एक ऐसी पौध लहलहा रही है, जो बाहर से गाँधीवादी दिखने का भरपूर प्रयास करते है लेकिन अन्दर से गाँधी जी के सिद्धान्तों के विरोध में सुविधासम्पन्न जीवन जीने के आदी हैं। 'कल्चर वल्चर' की कथावस्तु कोलकाता की 'भारतीय भाषा परिषद' को आधार बनाकर लिखी गई है। 'सहेला रे' उपन्यास में 1857 के पहले स्वतन्त्रता संग्राम के बाद अंग्रेजों ने मुजरे इत्यादि को ग़ैर–कानूनी करार दिया था, उसके बाद तवायफ़ों के सम्भ्रान्त कोठै उजड़ने लगे और स्थिति यहाँ तक पहुँची कि जो तवायफ़ें अपने हुनर के बल पर समाज में सम्मानजनक स्थिति में थी, वे धीरे–धीरे वेश्याओं में तब्दील होती चली गयीं। बाज़ारीकरण की दौड़ में कला सबसे पहले नीलाम होती है, इस नीलामी का उत्स मनाती पूंजी का खेल उपन्यास में दर्शाया गया है।

2018 में प्रकाशित उपन्यास जो दिखता नहीं, हम यहाँ थे है। 'जो दिखता नहीं' उपन्यास में राजेन्द्र दानी ने व्यक्ति के अकेलेपन को उसके डर के साथ बुनते हैं। आम भारतीय नागरिक की तरह सामान्य जीवन जीकर बच्चों के सपनों को पूरा करने वाले परिवार का मुखिया अपने ही परिवार में अकेला और निस्सहाय बनता चला जाता है। 'हम यहाँ थे' उपन्यास में तलाक़शुदा महिला जब आदिवासियों के बीच जाकर उनके संघर्ष और अभाव देखती है तो उसे लगता है, इनके सामने उसके अपने संघर्ष तो कोई अर्थ ही नहीं रखते।

2019 में प्रकाशित उपन्यास समय मेरे अनुरूप हुआ, कुठाँव, कालीधर, राजा जंगल और काला चाँद, अग्निलीक है। 'समय मेरे अनुरूप हुआ' उपन्यास में चन्द्ररेखा ढडवाल ने अपने ही परिवार में अकेली होती स्त्री की पीड़ा को उन्होंने जिस तरह व्यक्त किया, वह विरल है। परिवार में बड़ी होती लड़कियों की उपेक्षा और विवाह के नाम पर तमाम तरह के समझौतों से भरी जिन्दगी उपन्यास के केन्द्र में है। 'कुठाँव' उपन्यास जातिवाद को लेकर लिखा गया है, अब्दुल विस्मिल्लाह ने उपन्यास में भद्र मुसलमान परिवारों में छोटी जाति की औरतों के प्रति आकर्षण और उनसे देह–सम्बन्ध बनाने की लम्पट प्रवृत्ति को उभारा है। 'अग्निलीक' उपन्यास में हृषीकेश सुलभ ने आपातकाल के बाद से लेकर अब तक के गाँव को दर्शाया है। राजनीति के एकाधिपत्य के साथ धर्म और जाति के आधार पर अपने ही लोगों के शोषण की कथा है, जिसमें स्त्री विशेषरूप से पिस रही है। सबसे बड़े लोकतन्त्र के धूमिल चित्र ग्रामीण जीवन में अभी भी किस रूप में विद्यमान हैं, इसके लिए 'अग्निलीक' एक प्रमाण की तरह है।

2020 में प्रकाशित बिसात पर जुगनू, आईनासाज हैं। 'बिसात पर जुगनू' उपन्यास में वन्दना राग ने 1840 से 1910 तक के कालखण्ड की तीन ऐसी स्त्रियों की कथा कहता है, जिनका जन्म

तो बहुत साधारण परिवारों में हुआ लेकिन अपने साहस ओर शौर्य से उन्होंने ऐसे ऐतिहासिक कार्य किये, जिनसे वे अविस्मरणीय बन गयीं। 'आईनासाज' उपन्यास में अनामिका ने हिन्दी के पहले कवि अमीर खुसरो के जीवन, उनकी शायरी, दरबारों में उनकी उपस्थिति तथा हज़रत निजामुद्दीन औलिया के प्रति उनके समर्पण के साथ सूफ़ियाना जीवन के ठाठ को रेखांकित करता है। खुशरो हिन्दवी और फ़ारसी के मशहूर कवि थे, उनकी मसनवियों को बादशाह महत्व देते थे इसलिए आठ बादशाहों के दरबार में उनकी उपस्थिति अनिवार्य रूप से बनी रही। दो खण्डों में विभाजित इस उपन्यास के दूसरे खण्ड में सूफ़ियाना ज़िन्दगी जीते कुछ ऐसे लोगों का चित्रण है, जो आज भी सामाजिक दायत्व को अपना फ़र्ज मानकर चलते हैं लेकिन यह भी सच है कि वे न खुसरो है और न कलन्दर ही।

सन्दर्भ सूची

1. सिंह पुष्पपाल, 21वीं शती का हिन्दी उपन्यास, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 2015
2. पालीवाल सूरज, इक्कीसवी सदी का दूसरा दशक और हिन्दी उपन्यास, वाणी प्रकाशन 2022